


---

# Nachiketakrita Yama Stutih

——  
नचिकेतकृता यमस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Nachiketakrita Yama Stutih

File name : nachiketakRRitAyamastutiH.itx

Category : deities\_misc, stuti, varAhapurANa

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : varAhapurANa | adhyAya 198/9-20||

Latest update : September 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 4, 2024


*sanskritdocuments.org*

---



---

## Nachiketakrita Yama Stutih

——  
नचिकेतकृता यमस्तुतिः



ऋषिपुत्र (नचिकेत) उवाच ॥  
त्वं धाता य विधाता य श्राद्धे यैव छि दृश्यसे ॥  
पितृणां परमो देवश्चतुष्पाद नमोऽस्तु ते ॥ ९८ ॥  
कालज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवादी दृढव्रतः ॥  
प्रेतनाथ मलाभाग धर्मराज नमोऽस्तु ते ॥ ९० ॥  
कर्म कारयिता यैव भूतभव्यभवत्प्रभो ॥  
पावको मोहनश्चैव सङ्क्षेपो विस्तरस्तथा ॥ ९९ ॥  
दण्डपाणे विरुपाक्ष पाशहस्त नमोऽस्तु ते ॥  
आदित्यसदृशाकार सर्वशुवल्पर प्रभो ॥ ९२ ॥  
कृष्णवर्ण दुराधर्ष तैलरूप नमोऽस्तु ते ॥  
मार्तण्डसदृश श्रीमन्मार्तण्डसदृशद्युतिः ॥ ९३ ॥  
उर्व्यकव्यवहस्त्वं छि प्रभविष्णो नमोऽस्तु ते ॥  
पापहन्ता प्रती श्राद्धी नित्ययुक्तो मलातपाः ॥ ९४ ॥  
श्रेकदृग्भुङ्गुदृग्भूत्वा कालमृत्यो नमोऽस्तु ते ॥  
कवचिद्दण्डो कवचिन्मुण्डो कवचित्कालो दुरासदः ॥ ९५ ॥  
कवचिद्भालः कवचिद्भृङ्गः कवचिद्रौद्रो नमोऽस्तु ते ॥  
त्वया विराजितो लोकः शासितो धर्मलेतुना ॥ ९६ ॥  
प्रत्यक्षं दृश्यते देव त्वां विना न च सिध्यति ॥  
देवानां परमो देवस्तपसां परमं तपः ॥ ९७ ॥

जपानां परमं जप्यं त्वत्तश्चान्यो न दृश्यते ॥

ऋषयो वा तथा कुध्वा उतबन्धुसुलुज्जनाः ॥ १८ ॥

पतिप्रतास्तु या नार्यो दुःभितास्तपसि स्थिताः ॥

न त्वं शक्त एव स्थानात्पातनाय कदाचन ॥ १९ ॥

तस्मात्त्वं सर्वदिवेषु यैको धर्मभृतां वरः ॥

कृतज्ञः सत्यवादी च सर्वभूतहिते रतः ॥ २० ॥

एति वराडपुराणे अष्टनवत्यधिकशततमाध्यान्तर्गता नचिकेतकृता  
यमस्तुतिः समाप्ता ।

वराडपुराणे । अध्याय १९८/९-२० ॥

varAhapurANa . adhyAya 198/9-20..

Proofread by PSA Easwaran

---

*Nachiketakrita Yama Stutih*

pdf was typeset on September 4, 2024

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

